बकरी और बूढ़े बाबा

गांव में एक बकरी थी। उसका नाम चमेली था।
उसे हरी घास खाना अच्छा लगता था।

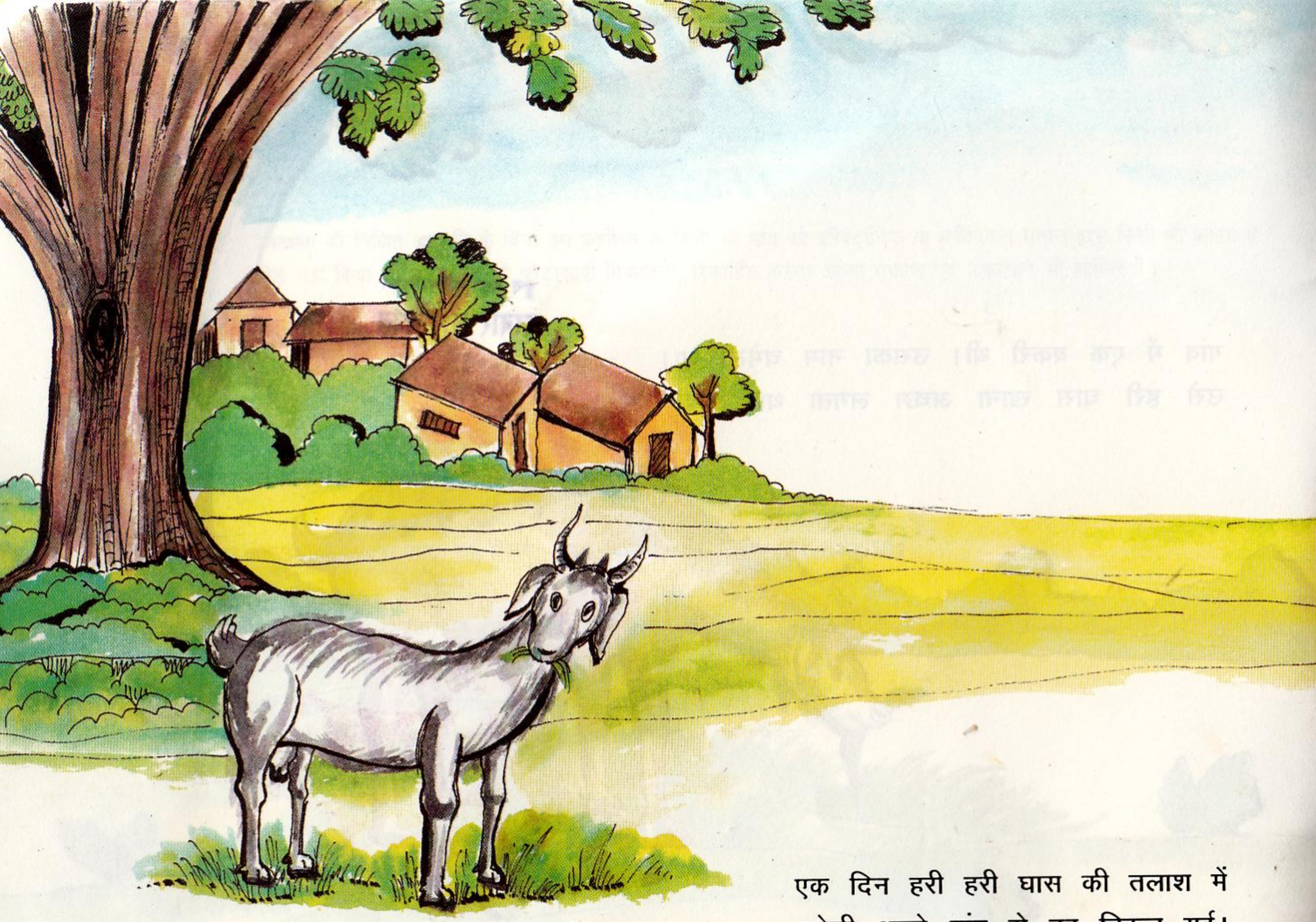

एक दिन हरी हरी घास की तलाश में
चमेली अपने गांव से दूर निकल गई।

घास खाते खाते जब शाम होने लगी तो उसे अपने गांव की याद आई। वह गांव की तरफ तेजी से चलने लगी।

रास्ते में एक जंगल पड़ता था, जिसमें बहुत से जानवर रहते थे। चमेली को वहां से गुजरते हुए डर लग रहा था। इतने में उसने सामने से एक भेड़िए को आते हुए देखा।

वह भेड़िये को देखकर बहुत घबराई, डर के मारे कांपने लगी और इधर उधर भागने लगी। कभी पेड़ की ओट में छिप जाती और कभी झाड़ के पीछे।

इसी बीच उसे बूढ़े बाबा लाठी लिये दिखाई दिये। वह जोर से रोने लगी मैं मैं मैं..... बकरी की आवाज सुनकर बूढ़े बाबा ने इधर उधर देखा तो उन्हें भेड़िया दिखाई दिया।

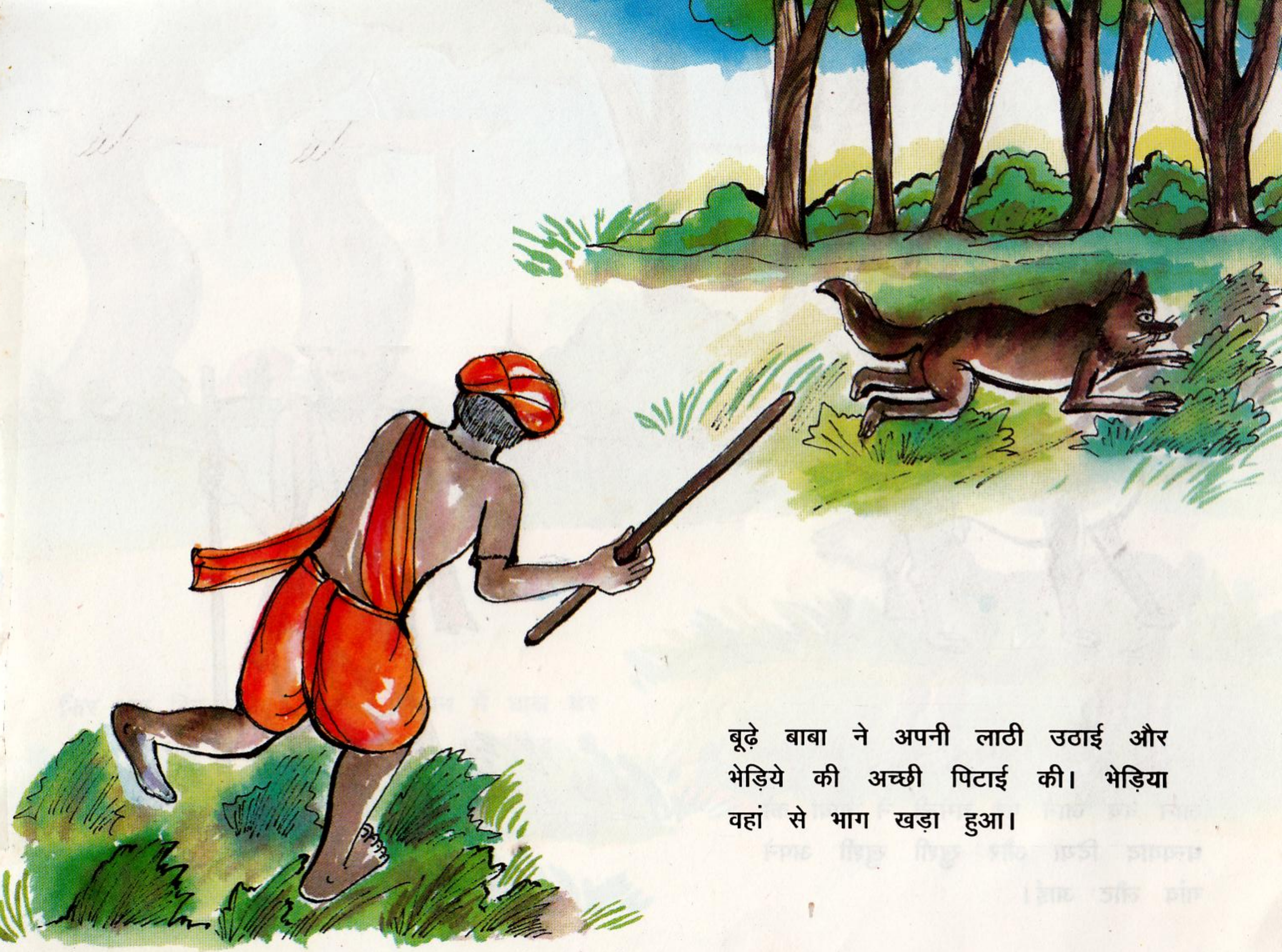

बूढ़े बाबा ने अपनी लाठी उठाई और भेड़िये की अच्छी पिटाई की। भेड़िया वहां से भाग खड़ा हुआ।

जान बच जाने पर चमेली ने बाबा को धन्यवाद दिया और खुशी खुशी अपने गांव लौट आई।

फिर एक दिन चमेली गांव के मैदान में घास चर रही थी तो उसने बूढ़े बाबा को एक पेड़ के नीचे सोते देखा। इसी पेड़ से एक मोटा सा सांप बूढ़े बाबा की ओर आ रहा था। चमेली जोर से चिल्लाने लगी मैं मैं मैं.....

..... और भाग कर नेवले को
बुला लाई।

नेवला सांप पर झपटा। खूब लड़ाई हुई और उसने सांप को मार गिराया यह शोर सुन बाबा की आंख खुल गई। उन्होंने देखा कि चमेली ने उनकी जहरीले सांप से जान बचाई। यह देखकर वह बहुत खुश हुए और उन्होंने चमेली को बहुत प्यार किया।

उस दिन से वह तीनों अच्छे दोस्त बन गये और साथ साथ रहने लगे।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान